अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस

22.5.2022

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा दिनांक 22.05.2022 को उत्पन्न प्राकृतिक व्यावधान के बाद संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी के तत्पर पहल पर दिनांक 24.05.2022 को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस, 2022 के अवसर पर "सभी जीवन के लिए एक साझा भविष्य निर्माण" विषय पर आभासीय मंच द्वारा एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें श्री प्रदीप कुमार, भा.व.से., सेवानिवृत प्रधान मुख्य वन संरक्षक, झारखंड एवं श्री श्रीनिवास मूर्ती आर, भा.व.से. (सेवानिवृत), पूर्व सदस्य सचिव, राज्य जैव विविधता बोर्ड, मध्य प्रदेश, निदेशक RVNL & Wetland Expert, GoMP ने क्रमश: **"सांसारिक अस्तित्व के लिए जैव विविधता संरक्षण (Biodiversity Conservation For Earthly Survival)"** एवं **"जैव विविधता और हमारा भविष्य-जीवन भर के लिए भविष्य साझा करें (Biodiversity and our Future –Shared Future for All Life)"** विषय पर व्याख्यान से संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं शोधकर्मियों को लाभांवित किया।

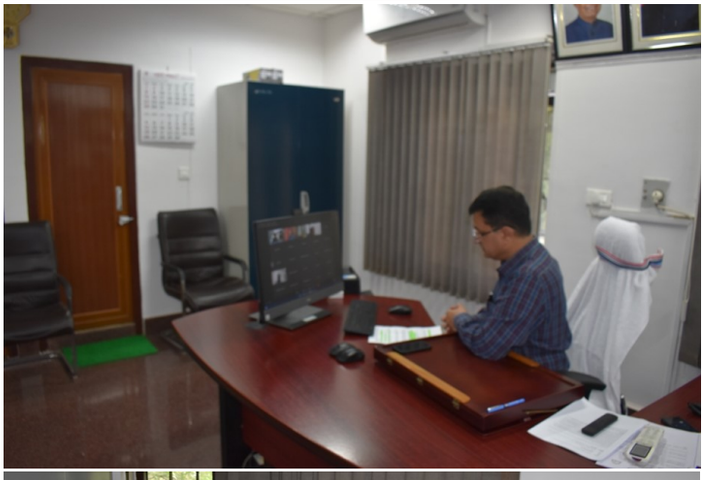

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

(वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार)

सुजलाम-सुफलाम गीत से भारत माता के प्राकृतिक सौंदर्य का आभास कराते हुए संचालिका श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की ने कार्यक्रम का परिचय देते हुए समस्त अतिथि वक्ताओं एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होनें सवालिया लहजे में आह्वान किया कि कवियों की कथनी में वर्णित धरा की प्रकृति और पर्यावरण से खेलवाड़ का हमे हक नहीं।

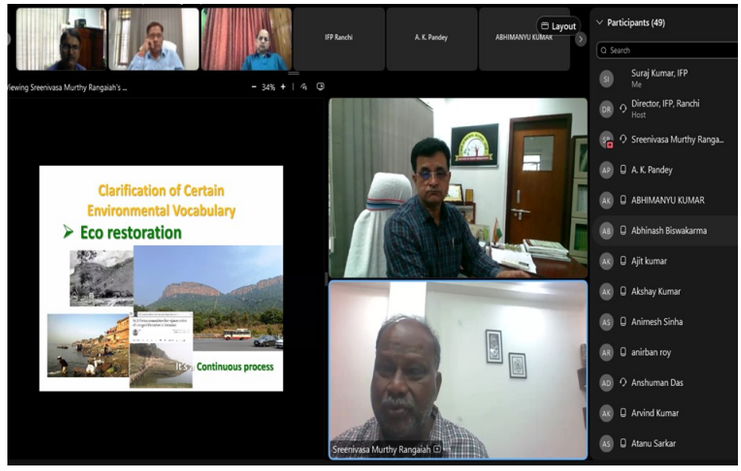

संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए व्यावधान के लिए खेद व्यक्त किया एवं मानव द्वारा हुई गलतियों के लिए आज का माहौल वर्वस प्रेरित करता है। मानव जीवन के अस्तित्व के लिए जैव विविधता संतुलन को आवश्यक बताते हुए चेतावनी दी कि प्रकृति काफी दबाव में है और कोरोना महामारी जैसी आपदाएं इसकी हीं उपज है। हमने अपने भौतिक स्वार्थ के लिए अपने अस्तित्व को खतरे में दाल लिया है जिससे निकलने का एकमात्र उपाय सार्वजनिक प्रयास हीं है। आधी से अधिक वन्य जीव, बहुत सारे वनस्पतियों को हमने खो दिया है , अब ना सजग हुए तो वापस लौटना असम्भव हो जायेगा। हमारी अनुभवी वक्ताओं का लाभ उठावें एवं एकल प्रयास को सामुदायिक प्रयास में तब्दील करें।

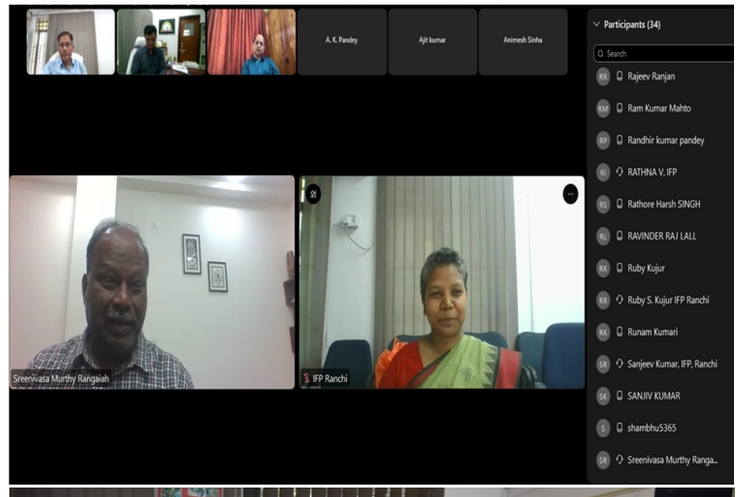

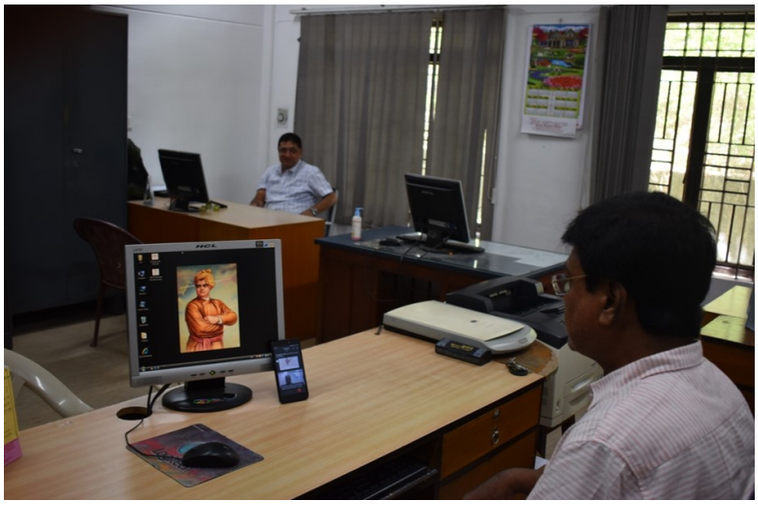

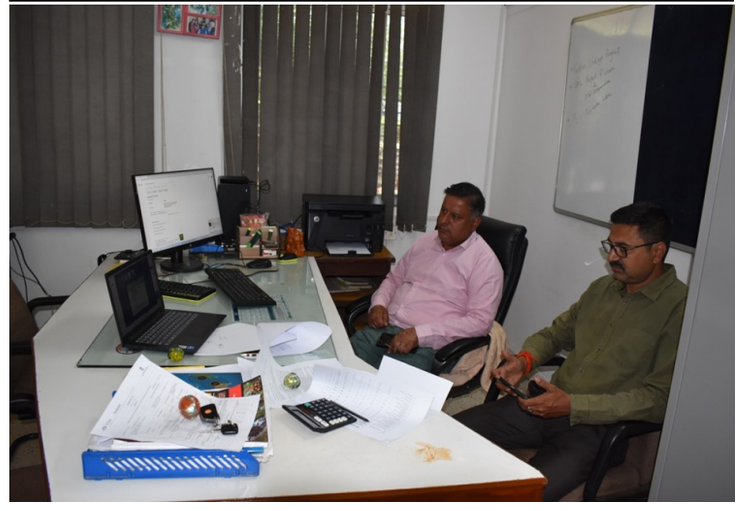

अनेकों पारितोषिक से विभुषित श्री निवास मूर्ती ने 650 से अधिक कार्यक्रमों का जिक्र करते हुए आज का वंदे मातरम के लिए साधुवाद दिया एवं सर्वे प्राणी निरामय:, सर्वे जनों सुखिन: भवति की व्याख्या को आज के कार्यक्रम का मूल बताया। सदस्य सचिव के दौर के दस्तावेजों का जिक्र करते हुए भारतीय जनमानस के कथनी एवं करनी में अन्तर को इसकी दूर्दशा का मुख्य कारण बताया। उन्होनें Sapiens एवं Homodew किताब पढ़ने की सलाह दी। विश्व युद्ध एवं बिमारियों से मरने वालों की तुलना में प्रकृति की मार से मरने वालों को विभीषक

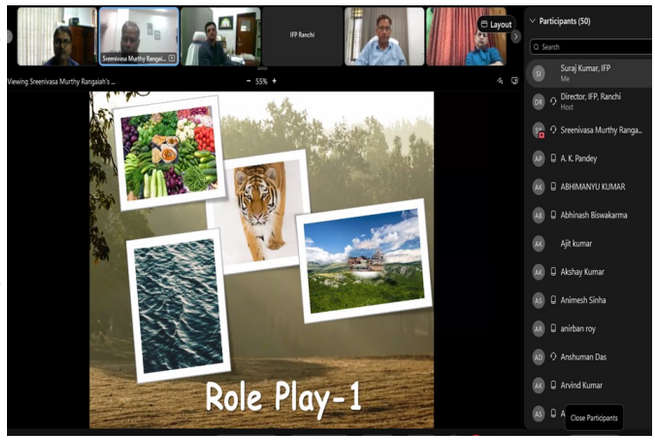

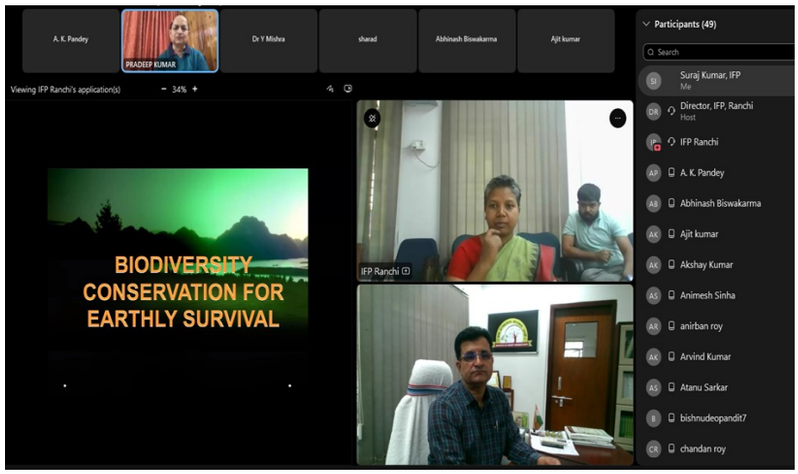

बताया। झारखंड की चर्चा करते हुए उन्होनें बताया खनिज सम्पदा का सिर्फ दोहन किया गया, संसाधन को संचित नहीं किया जा सका। दोहन अंत की परिणति होती है तथा इसकी भरपाई पौधरोपण से सम्भव नहीं है। हमारे जो प्राकृतिक धरोहर है उसकी हिफाजत और प्रबंधन से बढ़कर कोई सरल उपाय नहीं है। प्रकृति, पर्यावरण को परिभाषित करते हुए हवा, पानी, जमीन की सुरक्षा अहम बताया। इसकी रक्षा सारी समस्याओं का समाधान है। बढ़ती जनसंख्या, संसाधन संरक्षण से सम्भव है ना कि संसाधन विस्तार से। संसाधन सीमित है, इसका विस्तार संभव नहीं लेकिन संरक्षण करें तो सतत विकास संभव है। अंत में उन्होनें बाढ़, भूकम्प, दावानल आदि की चर्चा की एवं "सोये को जगाना आसान है, लेकिन सोने का बहाना करने वालों को जगाना मुश्किल" कहकर एक भावुक संदेश के साथ अपना व्याख्यान का अंत किया तथा 7 महीना धरती से एवं 5 महीना उधार से जीनें वालों को चेताया भी।

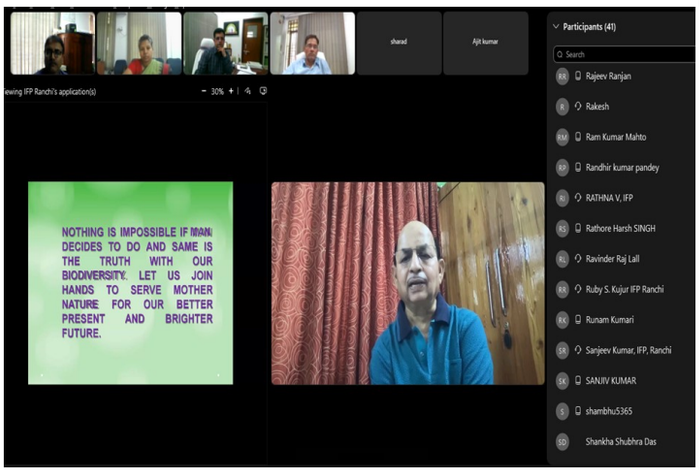

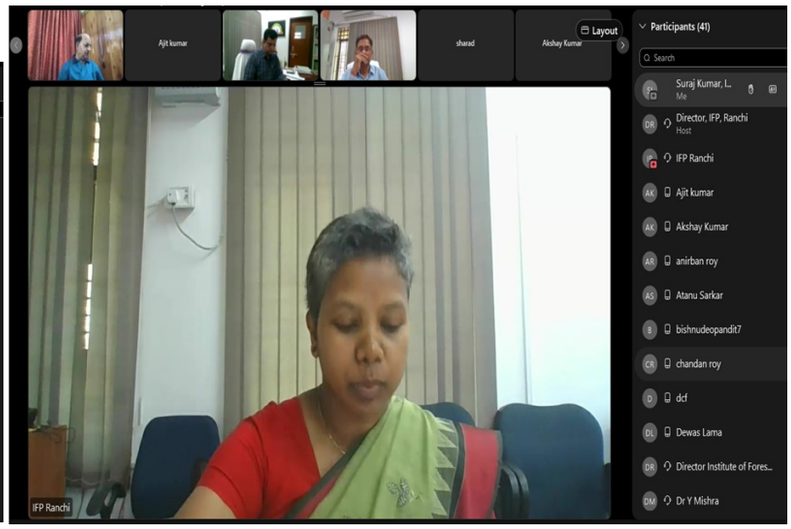

श्री प्रदीप कुमार, भाव.से., सेवानिवृत प्रधान मुख्य वन संरक्षक, झारखंड सरकार ने अपनी अस्वस्थता के बावजूद भी प्रकृति से जुड़े कार्यक्रम के लिए अपना समय निकाला एवं अपने दुखों की व्यन्जना की। पारिस्थिति का जिक्र करते हुए उन्होनें सवाल किया की पृथ्वी से सारे जंगल को हटाकर हम कितने सेकेण्ड जीवित रह पायेंगे। जैव विविधता दिवस हर दिन मनाने का वक्त बताते हुए मानव जीवन के अस्तित्व के लिए जैव विविधता के महत्व को विस्ताए से समझाया। उन्होनें Walter एवं Roshan की चर्चा की एवं जल, जंगल, जमीन, हवा, पानी की वर्त्मान स्थिति का उससे तुलना किया। पृथ्वी पर जीवों, वनस्पतियों की संख्या एवं आपसी संबंध को विस्तार से बताया। उन्होनें भारत 2.7% जमीन वाले देश की 7.8% जैव विविधता को प्रकृति का उपहार बताया। IUCN की रिपोर्ट की चर्चा की एवं विलुप्तप्राय तथा विलुप्त के कगाए पर के वनस्पतियों, जीवों का वर्णन किया। प्रदुषण, जलवायु परिवर्तन एवं वन दोहन तथा वन्यजीव व्यापार को भी विस्तार से बताया तथा खासकर बाघ के अंग व्यापार की भी चर्चा की। पाकुड़ के 100 एकड़ में किए अपने वानिकी कार्य की चर्चा करते हुए बताया कि आज वह एक काफी घना जंगल बन चुका है जहां वन्य जीवों ने आश्रय लेना शुरु कर दिया है। खनिज के लिए सर्वोत्तम झारखंड की चर्चा करते हुए उन्होनें बताया कि व्यक्तिगत लाभ के लिए झारखंड को बंजर में तबदील कर दिया गया है तथा सारा पारिस्थितिकी असंतुलित हो गया है। अपने शिक्षण दिनों के जंगल, झरना की चर्चा की जिसे आज देखना भी मुश्किल हो चुका है। बजटीय प्रावधानों की भी चर्चा की लेकिन बताया कि समस्या का समाधान सामूहिक प्रयासों से ही सम्भव है। मानव को भावनात्मक रुप से प्रकृति से जुड़ना होगा। अंत में उन्होनें निराशा की बेड़ियो को तोड़ने का आह्वान किया एवं बताया कि यदि मानव चाहे तो कुछ भी असम्भव नहीं है।

बीच में निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने भारतीय परम्पराओं धार्मिक उद्देश्य के लिए वानिकी धार्मिक महत्व के वृक्षों की भी चर्चा की और इन्ही छोटी-छोटी उपायों को जन-जन को अपनाने का अपील किया।

डा. योगेश्वर मिश्रा एवं डा. शरद तिवारी के शंकाओं को बड़ी ही सरलता से वक्ता ने समाधान किया।

डा. योगेश्वर मिश्रा ने इस वर्ष के लोगो (LOGO) का जिक्र करते सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) की मां के द्वारा वर्णित साल एवं तुलसी के पेड़ की चर्चा की एवं बताया कि हर साल 2-3 वनस्पति विलुप्त होती जा रही है जिससे मानव जीवन श्रृखला टुटती रहती है और आगे यह भीषण रुप लेकर मानव अस्तित्व के लिए खतरा है।

वक्ताओं, प्रतिभागियों, निदेशक, विस्तार प्रभाग, सूचना एवं तकनीकी प्रभाग एवं श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की संचालिका का धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की गई।

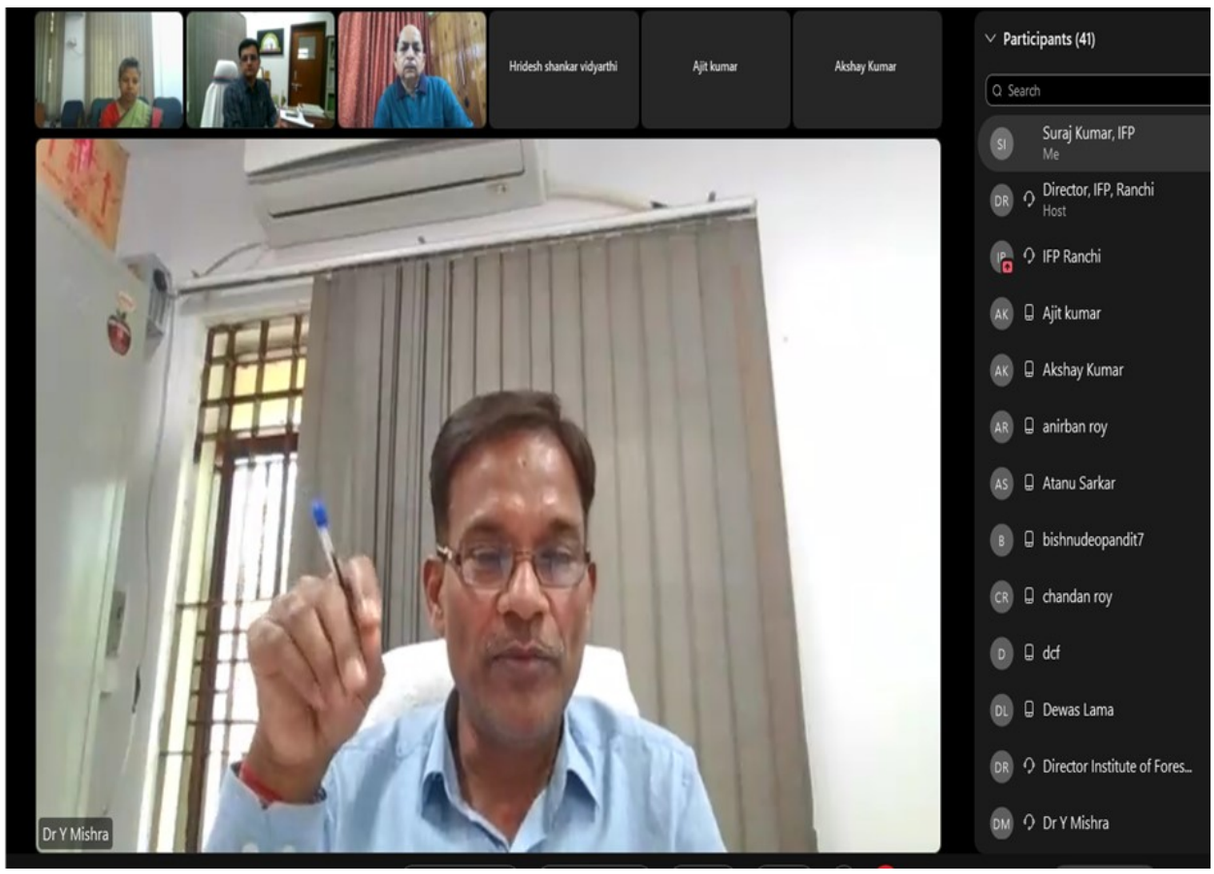

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

(वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार)